सीखना सुदृढ़ करने के लिए एक सहयोगी तरीक़ा

विनय नादगीर

सीखने को सुदृढ़ करने का आशय आमतौर पर (और सही ही) एक प्रक्रिया के तौर पर समझा जाता है जिसमें किसी कक्षा में ईनाम और सज़ा के माध्यम से व्यवहारों को आकार देने के लिए सकारात्मक अथवा नकारात्मक सुदृढ़ीकरण उपयोग किया जाता है। लेकिन सीखने के सुदृढ़ीकरण के लिए अन्य रास्ते भी हैं। सीखने को सुदृढ़ करने के लिए सीखने के अनुभव को इस तरह से भी तैयार किया जा सकता है जिसका दारोमदार उत्पाद में नहीं बल्कि प्रक्रिया में होता है। यह लेख सहयोगात्मक से सीखने के बारे में है जो सीखने को सुदृढ़ करता है।

सीखने को कई तरीक़े से समझा जा सकता है। एक तरीक़ा यह है कि इसे एक व्यक्तिगत उद्यम के रूप में देखा जाए। यह विचार इस सिद्धान्त पर आधारित है कि प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र रूप से सीख सकता है। लेकिन सीखने के दूसरे पहलू के रूप में हम यह भी कह सकते हैं कि सीखना एक सामाजिक प्रक्रिया है। यहाँ सामाजिक शब्द से मतलब यह है कि सीखना मिल-जुलकर होता है। मैं इस लेख में सहयोगात्मक तरीक़े से सीखने के विचार को खोलकर देखना चाहूँगा। इससे भी एक क़दम आगे बढ़कर मैं इस पर भी चर्चा करूँगा कि सहयोगात्मक सीखना सिर्फ़ इसलिए बेहतर नहीं है कि इसमें ज्ञानशास्त्रीय अर्थ में सीखने वाले को ज्ञान प्राप्ति में मदद करने की क्षमता है बल्कि इसलिए भी है कि इसमें मानक और सामाजिक मूल्य निहित होते हैं। मैं लेख के दूसरे भाग में शिक्षक को कुछ सामान्य सुझाव और संकेत दूँगा जिन्हें वे विद्यार्थियों के लिए सहयोगी सीखने के अनुभव को डिज़ाइन करते हुए अपने दिमाग़ में रख सकेंगे। अन्त में, मैं उन चीज़ों की संक्षेप में बात करूँगा जो मेरे हिसाब से सहयोगात्मक सीखने की गतिविधि का निहित मूल्य हैं।

सहयोगात्मक सीखना क्या है?

“जो व्यक्ति पढ़ाता है वह दुबारा से सीखता है”, यह मुहावरा सीखने को सुदृढ़ बनाने को बहुत अच्छी तरह से अभिव्यक्त करता है। इसे सहयोगात्मक सीखने की प्रक्रिया में सबसे अच्छी तरह देखा जा सकता है, जहाँ विद्यार्थी बिना जाने एक-दूसरे को सिखाते हैं और साथ ही अपने ख़ुद के सीखने को भी सुदृढ़ करते हैं।

सहयोगात्मक सीखना निम्न तरीक़ों से सीखने को सुदृढ़ करता है :

- सीखने वाले को सक्रिय तरीक़े से जोड़कर।
- सहपाठियों के साथ सीखने-सिखाने को प्रोत्साहित करके।
- पुनरीक्षण, पुनरावृत्ति और स्मरण करने की गुंजाइश देकर।
- चर्चा और स्पष्टीकरण के लिए अवसर उपलब्ध करवाकर।
- सीखने वाले को स्वायत्तता के लिए जगह देकर।

जब हम कहते हैं कि बच्चों को सहयोग करना सीखना चाहिए तब हमारे दिमाग़ में आमतौर से जो पहला शब्द आता है वह है ‘समूह बनाना’। और विद्यार्थियों के समूह बनाकर हम मान लेते हैं कि बच्चे एक-दूसरे से सीख रहे हैं। सहयोगात्मक सीखने के साथ जो दूसरा विचार आमतौर से जुड़ता है वह है मिल-जुलकर सीखने अर्थात ‘सहपाठियों के साथ सीखने’ की प्रक्रिया। हालाँकि, सहयोगात्मक सीखने के लिए ये दोनों ही बहुत ज़रूरी हैं लेकिन, हमें इस समझ को और बढ़ाने की ज़रूरत है कि वह क्या है जो सहयोगात्मक सीखने को उसका अर्थ देता है। जॉनसन एंड जॉनसन (1999) कहते हैं कि सहयोगात्मक सीखने के 5 बुनियादी तत्व होते हैं :

1. *सकारात्मक परस्पर निर्भरता :* यह और कुछ नहीं केवल यही विचार है कि “मैं तब तक सफल नहीं हो सकती, जब तक सभी सफल नहीं होते”, अथवा “सभी एक के लिए और एक सभी के लिए।” अतः, केवल व्यक्तिगत सीखने का लक्ष्य ही नहीं, बल्कि पूरे समूह के लिए परस्पर सहयोगी लक्ष्य को भी चिह्नित करना चाहिए। सकारात्मक परस्पर निर्भरता को बढ़ाने के लिए शिक्षक एक बड़े प्रोजेक्ट के छोटे-छोटे हिस्सों को समूह के सदस्यों को दे सकता है। हम इसे जिग्सा पहेली के हिस्से के तौर पर देख सकते हैं जिसमें इस पहेली को हल करने के लिए एक समूह के अलग-अलग सदस्यों को साथ-साथ काम करने की ज़रूरत होती है।

2. *व्यक्तिगत जवाबदेही :* जब विद्यार्थी एक बड़ी तस्वीर से कटकर अलग-अलग व्यक्ति के रूप में काम करते हैं तब उनकी जवाबदेही का आकलन करना बहुत कठिन होता है। किन्तु सहयोगात्मक सीखने के ढाँचे में जवाबदेही से

भागना बहुत मुश्किल हो जाता है। समूह के लक्ष्य को हासिल करने के दौरान विद्यार्थियों को व्यक्तिगत तौर पर जवाबदेह बनाया जा सकता है।

3. *आमने-सामने की अन्तर्क्रिया :* जब विद्यार्थियों को सहयोगात्मक रूप से, जैसे कक्षा प्रोजेक्ट के लिए, काम करने को कहा जाता है तब वे समूह के लक्ष्य को हासिल करने के लिए एक-दूसरे की मदद और सहयोग करते हैं। इसमें एक-दूसरे के ज़रिए कतिपय रवैए, चिन्तन प्रक्रियाएँ और संज्ञान गतिविधियाँ प्रस्फुटित होती हैं। जैसे कि उस समय जब वे एक-दूसरे से सवाल करते हैं या अपने ज्ञान को दूसरों को स्थानान्तरित करते हैं।

4. *सामाजिक कौशल :* सहयोगात्मक काम का एक बुनियादी तत्व है कि यह विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल को पोषित करता है। समूह में सीखना सम्भव बनाने के लिए किसी विद्यार्थी को सम्प्रेषण की योग्यता प्रदर्शित करनी होगी, टकरावों को कम करना होगा, विश्वास बनाना होगा और एक टीम सदस्य बनना होगा।

5. *समूह प्रक्रिया :* यह सहयोगात्मक सीखने का एक मेटा (Meta) स्तरीय तत्व है। यहाँ समूह में विद्यार्थी समूह की प्रक्रिया पर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं और उसकी प्रभावशील बातों और ख़ामियों को मुखर करते हैं। समूह की प्रक्रिया पर चिन्तन करना वास्तव में इस प्रक्रिया में बनने वाले सम्बन्धों पर चिन्तन होता है।

सहयोगात्मक सीखने के अनुभव को डिज़ाइन करने के लिए कुछ दिशा-निर्देश

सहयोगात्मक सीखने के अनुभव को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षक विद्यार्थियों के साथ काम करते हुए निम्नांकित संकेतकों में से कुछ का अनुसरण कर सकते हैं। ये मोटे-मोटे दिशा-निर्देश हैं और इसमें और बहुत कुछ शामिल करके सूची को विस्तृत किया जा सकता है।

1. सहयोगात्मक सीखने की गतिविधि के उद्देश्यों को विद्यार्थियों के सामने स्पष्ट रूप से रखना चाहिए। आदर्श रूप में यह गतिविधि शिक्षक द्वारा इसके फ़ायदे समझाने के साथ शुरू होनी चाहिए। यह ख़ासतौर से तब उपयोगी होती है जब कक्षा में पढ़ाए गए पाठ की पुनरावृत्ति की जा रही हो।

2. शिक्षक को कक्षा के अन्दर के सहयोगात्मक सीखने को कक्षा के बाहर खेले जाने वाले खेल से जोड़ना चाहिए। खेल और इस तरह की गतिविधियाँ बच्चों को परस्पर सहयोग करने के मूल्य सिखाने में सबसे अच्छी तरह से मदद करती हैं। समूह में खेले जाने वाले खेल विद्यार्थियों को स्पष्ट तौर पर यह दिखाने में मदद करते हैं कि उनके परस्पर सहयोग से कैसे किसी लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। शिक्षक बोर्ड गेम और पहेलियों का भी इस्तेमाल कर सकते हैं और उन्हें परस्पर सहयोग वाली गतिविधि में बदल सकते हैं।

3. शिक्षकों को विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करना चाहिए कि वे बिना किसी हिचकिचाहट और भय के चर्चा में शामिल हों। उन्हें खुले सवालों और 'ऐसा होता तो क्या होता' जैसी परिकल्पित स्थितियों के माध्यम से सवाल पूछने की प्रक्रिया में मदद करनी चाहिए। इन उच्च स्तर के सवालों और परिकल्पित परिस्थितियों के ज़रिए बच्चों की आलोचनात्मक चिन्तन की क्षमता और भाषा क्षमता भी मज़बूत होती है।

4. अगर शिक्षक परस्पर सहयोग से सीखने की गतिविधि की योजना अच्छी तरह से न बनाएँ, तो यह अराजकता में बदल सकती है। शिक्षक को गतिविधि के लिए कुछ बुनियादी नियम ज़रूर तय करने चाहिए; जैसे भाषा का इस्तेमाल, बारी-बारी से अपनी भूमिका निभाना, ज़रूरत होने पर सहयोग की माँग करना, बिना व्यवधान उत्पन्न किए असहमति दिखाना, समय सीमा आदि।

5. सहयोग के ज़रिए सीखने को सुदृढ़ बनाने के लिए सबसे बुनियादी शर्त यह है कि शिक्षक का अपनी कक्षा के साथ एक अर्थपूर्ण रिश्ता हो। इसका मतलब है कि शिक्षक को विद्यार्थियों की ख़ूबियों और सहपाठियों के बीच उनकी स्थिति के बारे में अच्छी तरह पता होना चाहिए। विद्यार्थियों का समूह बनाते समय दक्षता और ख़ूबियों का बँटवारा ध्यान से करना चाहिए ताकि ऐसी स्थितियों को टाला जा सके जहाँ कुछ ख़ास विद्यार्थी चर्चा/ गतिविधि पर हावी हो जाते हैं। अतः, समूह का गठन करते समय शिक्षक को एक सन्तुलन बनाए रखना चाहिए। कुछ शिक्षकों के लिए विद्यार्थियों की भूमिका तय कर देने से समूह के लिए अपने काम को समन्वित करना आसान हो सकता है। कुछ अन्य शिक्षक यह बेहतर मानते हैं कि यह निर्णय समूह के सदस्यों पर छोड़ देना चाहिए कि वे ही चीज़ें तय करें और उन्हें क्रियान्वित करें।

एक शिक्षक के रूप में हम समझते हैं कि सीखने की सबसे ज़्यादा प्रभावी गतिविधि वह होती है जो दो मानदण्डों को पूरा करती है। पहला, वे स्तर-अनुरूप होनी चाहिए लेकिन फिर भी चुनौतीपूर्ण होनी चाहिए। और दूसरा, उन्हें विद्यार्थियों को जोड़ने में समर्थ होना चाहिए। अलबत्ता, सहयोगात्मक समूह गतिविधि के ज़रिए सीखने को सुदृढ़ बनाने के लिए एक तीसरे

मानदण्ड को भी पूरा करना चाहिए – कोई विद्यार्थी अपनी गतिविधियों को सिर्फ़ समूह में ही कर पाए। समूह-आधारित सुदृढ़ीकरण बहुत प्रभावी हो सकता है क्योंकि यह सहयोगात्मक होता है।

सहयोगात्मक गतिविधि के ज़रिए सीखने को सुदृढ़ बनाने के लिए विद्यार्थियों और शिक्षक दोनों की सक्रिय भागीदारी की आवश्यकता होती है। अतः यह विद्यार्थियों के लिए कक्षा में बहुत समय खपाने वाला हो सकता है, वहीं शिक्षक के लिए इसे डिज़ाइन करना और आकलन करना बहुत श्रमसाध्य हो सकता है। यह सही है कि उन्हें ढेर सारे नियोजन की ज़रूरत होगी, लेकिन इस अवधारणा में ऐसे बहुत से सशक्त बिन्दु हैं, कि इसे इस्तेमाल न करना ठीक नहीं होगा। इस तरीक़े का इस्तेमाल करने से विद्यार्थियों का आत्मविश्वास और उत्साह बढ़ेगा तथा सहपाठियों के साथ सीखने और ग़लत अवधारणाओं को स्पष्ट करने से उनकी समझ बढ़ेगी। इस तरह के जुड़ाव का स्थायी लाभ इसकी तात्कालिकता से परे जाता है और एक विद्यार्थी जो समाज में अपनी जगह बनाने के लिए तैयार हो रहा होता है, उसकी मदद करता है।

References

Goldman, Alvin and O'Connor, Cailin, "Social Epistemology", The Stanford Encyclopaedia of Philosophy (Winter 2021 Edition), Edward N. Zalta (ed.), https://plato.stanford.edu/archives/win2021/entries/epistemology-social/.

David W. Johnson & Roger T. Johnson (1999) Making Cooperative Learning Work, Theory Into Practice, 38:2, 67-73.

David W. Johnson & Roger T. Johnson (1989). Cooperation and Competition: Theory and Research. United States: Interaction Book Company.



विनय नादगीर अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय बेंगलूरु में अध्यापक हैं। वे बीएससी, बीएड प्रोग्राम पढ़ाते हैं और उनकी रुचि भाषा और साक्षरता में है। पहले वे एक स्कूल में एक दशक से ज़्यादा समय तक काम कर चुके हैं। शिक्षक की पहचान तथा स्कूल में होने वाले टकरावों से सम्बन्धित विषयों में उनकी गहरी रुचि है। उनसे *vinay.nadgir@apu.edu.in* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** सुशील जोशी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय

खुली-किताब आकलन प्रणाली का एक अन्य घटक खुले सवाल थे। किसी स्थिति पर बच्चों के मत पूछे जाते, जैसे “अगर तुम वित्त मंत्री होते और राजस्व बढ़ाना चाहते, तो तुम किस चीज़ में वृद्धि करते : नमक पर कर या कारों पर लगाया जाने वाला कर?” यहाँ उद्देश्य उनके जवाब प्राप्त करना और उनके पीछे के तर्क को जानना था, न कि उनके जवाबों का मिलान पाठ या शिक्षक के नज़रिए से करना। इस पहलू को आत्मसात करने में कुछ अभ्यास लगा।

– अरविन्द सरदाना, एकलव्य का सामाजिक विज्ञान कार्यक्रम : अभ्यास पर चिन्तन, पेज 6